अध्याय

10

भारतीय तर्कशास्त्र

तर्क विद्या को अंग्रेजी में लॉजिक कहते हैं। व्युत्पत्ति की दृष्टि से 'लॉजिक' शब्द (logic) ग्रीक विशेषण लाजिके (logike) से हुई है, जो ग्रीक संज्ञा शब्द 'लोगोस' (logos) के अनुरूप है। 'लोगोस' का अर्थ विचार (Thought) है। इसे विचारों की भाषा में अभिव्यक्ति करना भी कह सकते है। (Speech) तर्क से तात्पर्य ज्ञान से अज्ञान की ओर अग्रसर होना है। तर्क एक परोक्ष ज्ञान है जो किसी प्रत्यक्ष ज्ञान पर आधारितहोताहै।

ज्ञान के साधन प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द है। प्रत्यक्ष ज्ञान को साक्षात्–ज्ञान भी कहते हैं। अनुमान और शब्द से प्राप्त ज्ञान परोक्ष ज्ञान कहलाता है।

10.01 प्रत्यक्ष, अनुमान प्रमाण

प्रत्यक्ष का अर्थ है प्रति(सम्मुख)+अक्ष(आंख या इन्द्रियां) अर्थात इन्द्रियों के सम्मुख होना। प्रत्यक्ष ज्ञान को यथार्थ कहा जाता है और उसकी प्रमाणिकता निस्संदेह मानी जाती है। कोई भी व्यक्ति इन्द्रियों द्वारा प्राप्त को झूठा नहीं समझता है। प्रत्यक्ष असंदिग्ध अनुभव है और इन्द्रिय संयोग द्वारा उत्पन्न होता है। उदाहरण के लिए– एक व्यक्ति के नेत्र तथा वस्तु (टेबल, कुर्सी आदि) के सम्पर्क से जो असंदिग्ध ज्ञान प्राप्त होता है, वह प्रत्यक्ष है। प्रत्यक्ष सदैव असंदिग्ध नहीं होता।

प्रत्यक्ष और भ्रम – रस्सी को सांप समझ लेना, यथार्थ ज्ञान तो नहीं है, परन्तु कभी – कभी व्यक्ति भ्रमवश ऐसा समझ लेता है। जब व्यक्ति रस्सी को सांप समझता है तो 'उस समय' वह अपने इस ज्ञान को असंदिग्ध समझता है।

प्रत्यक्ष और संशय – एक व्यक्ति दूर से किसी वस्तु को देखकर समझता है कि यह आदमी है या खंभा?यहाँ व्यक्ति संशय में है अतः इस ज्ञान को अंसदिग्ध और यर्थार्थ नहीं कहा जा सकता।

किसी वस्तु का ज्ञान जब बिना किसी पूर्व अनुभव या अनुमान के होता है (1) अर्थात् साक्षात्–प्रतीति के द्वारा होने वाला ज्ञान प्रत्यक्ष है। जैसे दोपहर में सूर्य की उपस्थिति के ज्ञान हेतु केवल मस्तक उठाने की आवश्यकता होती है।

प्रकार –

(I) इन्द्रिय और वस्तु के संयोग के आधार पर प्रत्यक्ष के दो प्रकार होते हैं–

(1) **लौकिक प्रत्यक्ष** – जब इन्द्रिय और वस्तु का संयोग साधारण ढंग से होता है।

लौकिक प्रत्यक्ष दो प्रकार का होता है–

(अ) बाह्य – यह आँख, कान, नाक त्वचा तथा जिव्हा के द्वारा होता है। इनके द्वारा रंग, शब्द, गंध, स्पर्श और रस का ज्ञान प्राप्त होता है।

(ब) मानस – मानसिक अनुभूतियों के साथ मन के संयोग से होता है। मन अंतःइन्द्रिय है, इसके द्वारा इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख–दुःख का प्रत्यक्ष होता है।

(2) **अलौकिक प्रत्यक्ष** – वह तीन प्रकार का होता है–

(अ) सामान्य – लक्षण (ब) ज्ञान – लक्षण (स) योगज

(अ) **सामान्य लक्षण** – साधारण या लौकिक प्रत्यक्ष के द्वारा हम मनुष्य को तो जान सकते हैं किन्तु मनुष्य जाति (मनुष्यत्व) को नहीं जान सकते। मनुष्य – जाति का ज्ञान अलौकिक प्रत्यक्ष के द्वारा प्राप्त होता है। अर्थात् जब हम किसी व्यक्ति को देखकर उसे मनुष्य समझते है तो उसमें मनुष्यत्व

(सामान्य – धर्म) का भी प्रत्यक्ष होता है। मनुष्यत्व को जानना जिनमें मनुष्यत्व धर्म है।

(ब) ज्ञान लक्षण – इससे एक इन्द्रिय किसी दूसरे के विषय का अनुभव कर सकता है। अतीत ज्ञान के कारण ही इस तरह का अनुभव होता है, इसे ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष कहते है। उदाहरण के लिए, जब कोई व्यक्ति कहता है कि 'पत्थर ठोस दिख पड़ता है' लेकिन ठोसपन को स्पर्श से जाना जा सकता है, उन्हें आँख नहीं देख सकती नैयायिकों का कहना है कि अतीत में कई बार पत्थर को देखा है इसलिए पत्थर को देखने के साथ ही ठोसपन के स्पर्श का भी अनुभव हो जाता है।

(स) योगज – इसके द्वारा भूत तथा भविष्य, गूढ़ तथा सूक्ष्म, निकट और दूर सभी प्रकार की वस्तुओं की साक्षात् अनुभूति होती है। जिन व्यक्तियों ने योगाभ्यास से अलौकिक शक्ति प्राप्त की है, वे ही ऐसी अनुभूति प्राप्त कर सकते है।

युक्त – योग में सिद्धि प्राप्त व्यक्ति को यह शक्ति अपने आप प्राप्त हो जाती है इसका कभी नाश नहीं होता।

युंजान – योग में आंशिक सिद्धि प्राप्त व्यक्ति को यह शक्ति ध्यान धारणा के द्वारा प्राप्त होती है।

(II) प्रत्यक्ष ज्ञान के अविकसित या विकसित रूप के आधार पर लौकिक प्रत्यक्ष के तीन भेद होते है।

(1) निर्विकल्पक प्रत्यक्ष – यह प्रत्यक्ष का अविकसित रूप है। जिसमें किसी वस्तु के स्वरूप और धर्मों (सामान्य तथा विशेष) की प्रतीति हो जाती है। वस्तु के रूप, रंग आदि को निर्विकल्प भान होता है। यह अविकसित बीजमात्र है।

(2) सविकल्पक प्रत्यक्ष – वस्तु के जिन स्वरूप और धर्मों की प्रतीति निर्विकल्पक प्रत्यक्ष में होती है, इन्हे पहले संबद्ध रूप में देखा गया है और इसी के आधार पर सविकल्पक प्रत्यक्ष (उद्देश्य विद्येय) होता है। यह प्रत्यक्ष का विकसित रूप है। प्रत्यक्ष की इन दो अवस्थाओं (निर्विकल्पक और सविकल्पक) को इसलिए मानना होता है क्योंकि पहले (निर्विकल्पक) प्रत्यक्ष द्वारा उद्देश्य और विद्येय (विशेष्य और विशेषण) को हम जानते हैं और बाद में (सविकल्पक) प्रत्यक्ष द्वारा दोनों में सम्बन्ध स्थापित करते है। उदाहरण के लिए पहले वस्तु (मनुष्य) और मनुष्यत्व को जान लेने के बाद ही ''यह मनुष्य है'' का ज्ञान संभव होता हैं।

(3) प्रत्यभिज्ञा – प्रत्यभिज्ञा का अर्थ है 'पहचान'। यदि किसी व्यक्ति को देखने से साक्षात्–ज्ञान हो कि 'यही वह मनुष्य है (जिसे पहले देखा था)' तो इस ज्ञान को 'प्रत्यभिज्ञा' कहते हैं।

अनुमान

अनुमान 'अनु' तथा 'मान' के योग से बना है। अनु का अर्थ है 'पश्चात्' और 'मान' का अर्थ है 'ज्ञान'। वह ज्ञान जो किसी पूर्व – ज्ञान के पश्चात् आता है, वह अनुमान है।

अनुमान एक विचार – प्रणाली है जिसमें हम किसी साधन के द्वारा किसी साध्य का ज्ञान प्राप्त करते है और इन दोनों में व्याप्ति सम्बन्ध विद्यमान रहता है।

उदाहरण के लिए – ''पर्वत अग्नियुक्त है, क्योंकि यह घूमयुक्त है'' यहाँ, पर्वत से उठते हुए धुँए को देखकर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि वहाँ आग है, क्योंकि हमें इस बात का पहले से ही ज्ञान है कि धुआँ और आग में व्याप्ति का सम्बन्ध स्थापित है।

अवयव – किसी अनुमान में कम से कम तीन पद होंगे तथा कम से कम तीन वाक्य होगे। अनुमान द्वारा हम अप्रत्यक्ष विषय के बारे में जानते है, जिसके लिए किसी साधन की आवश्यकता होती है। साध्य तथा साधन के बीच अविच्छेद्य सम्बन्ध होना भी आवश्यक है। आग तथा धुएँ वाले उदाहरण में अनुमान के तीन भाग है। प्रथम पवर्त में धुआँ है, दूसरा धुआँ तथा आग में व्याप्ति है, तीसरा पर्वत में आग है। यहाँ पवर्त 'पक्ष' है, धुआँ **'साधन'** (हेतु) है, अग्नि **'साध्य'** (प्रतिज्ञा) है।

पक्ष – अनुमान का वह अंग जिसके सम्बन्ध में अनुमान करते है। उदाहरण – पर्वत के सम्बन्ध में ही विचार करते है कि वह अग्नियुक्त है या नहीं?

(साधन) **हेतु** – वह साधन जिसके द्वारा साध्य को पक्ष में सिद्ध करते है। उदहारण – धुआँ वह साधन है जिससे यह सिद्ध होता है कि पर्वत में अग्नि है।

साध्य – जो पक्ष के सम्बन्ध में सिद्ध किया जाता है। उदाहरण – अग्नि 'साध्य' है, अनुमान के द्वारा पर्वत

के सम्बन्ध में अग्नि को ही सिद्ध करना है।

अनुमान के भेद

अनुमान में कम से कम तीन निश्चित वाक्य अवश्य होते है। अनुमान निश्चयात्मक वाक्यों से बने है। नैयायिक अनुमान को तीन प्रकार से स्पष्ट करते है।

(I) प्रयोजन भेद के आधार पर (स्वार्थ और परार्थ) अपने ज्ञान के लिए किया जाने वाला अनुमान स्वार्थानुमान कहलाता है। किसी बात को दूसरों को समझाने के लिए जब हम अनुमान करते है, तो यह परार्थ अनुमान कहलाता है।

(II) व्याप्ति के भेद के अनुसार – (1) पूर्ववत, (2)शेषवत् और गौतम के प्राचीन न्याय के अनुसार (3) सामान्यतोदृष्ट

(1) **पूर्ववत** – कार्य कारण नियम पर आधारित होने के कारण कार्य का अनुमान वर्तमान कारण से कर लेते है। उदाहरण – आकाश में बादल को देखकर वर्षा का अनुमान करना।

(2) **शेषवत्** – कार्य कारण नियम पर आधारित होने के कारण वर्तमान कार्य से पहले के कारण का अनुमान करना। उदाहरण – प्रातकाल चारों ओर पानी देखकर रात में वर्षा के हो चुकने का अनुमान करना।

(3) **सामान्यतोदृष्ट** – ऐसा अनुमान जिसमें साधन पद और साध्य पद में कारण कार्य संबंध नहीं होता है अपितु दोनों सदैव एक –दूसरे के साथ पाए जाते हैं अतः एक से दूसरे का अनुमान होता है। उदाहरण – जैसे ही हम सुनते हैं कि अमुक पक्षी बगुला है वैसे ही हम अनुमान करते हैं कि वह उजला होगा।

(III) व्याप्ति को स्थापित करने की भिन्नता के आधार पर –

(1)केवलान्वयी

(2)केवल व्यतिरेकी

(3)अन्वय व्यतिरेकी

(1) **केवलान्वयी** – जब व्याप्ति की स्थापना भावात्मक उदाहरणों से होती है।

(2) **केवल व्यतिरेकी** – जब व्याप्ति की स्थापना निषेधात्मक उदाहरणों के द्वारा संभव है।

(3) **अन्वय व्यतिरेकी** – जिस अनुमान में व्याप्ति की स्थापना अन्वय और व्यतिरेक दोनों से हो।

हेत्वाभास अनुमान के साधन को जो दोषपूर्ण बनाते हैं, उन्हें हेत्वाभास कहा जाता है। चूंकि अनुमान हेतु पर ही निर्भर करता ह, अतः हेतु में कोई दोष होने पर अनुमान दूषित हो जाता है।

ये पाँच प्रकार के होते हैं–

(1) सव्यभिचार (2) विरूद्ध (3) सत्यप्रतिपक्ष (4) असिद्ध (5) बाधित

10.02 पंचावयव अनुमान एवं निर्दोष व्याप्ति

स्वार्थ और परार्थ अनुमान – यदि अनुमान अपने लिए ही हो (स्वार्थ) तो उसे क्रमबद्ध वाक्यों के रूप में प्रकट करने की आवश्यकता नहीं होती। परन्तु जब दूसरों के सम्मुख (परार्थ) किसी तथ्य को प्रदर्शित करना होता है तो अनुमान को क्रमबद्ध रूप में श्रृंखला के रूप में प्रकट करने की आवश्यकता होती है।

नैयायिकों का मानना है कि दूसरों को समझाने के लिए अनुमान को पाँच वाक्यों (अवयव) में व्यक्त करते है। इन अवयवों के नाम है– प्रतिज्ञा, हेतू, उदाहरण उपनय और निगमन।

पंचावयव अनुमान का उदाहरण –

(1) मोहन मरणशील है। (प्रतिज्ञा)

(2) क्योंकि यह मनुष्य है। (हेतु)

(3) सभी मनुष्य मरणशील है, जैसे राम, सोहन, रमेश आदि। (उदाहरण)

(4) मोहन मनुष्य है। (उपनय)

(5) अतः वह मरणशील है। (निगमन)

प्रतिज्ञा – जिस विषय पर विचार हो रहा हो, उसे पहले ही स्पष्ट कह देना।

हेतु – प्रतिज्ञा के कारण को स्पष्ट किया जाता है।

उदाहरण – इसमें साध्य और हेतु का अविच्छिन्न सम्बन्ध उदाहरण के साथ दिखाया जाता है।

उपनय – इसमें यह दिखाया जाता है कि उदाहरण वाक्य विवेच्य विषय में भी लागू होता है।

निगमन – जो उक्त वाक्यों से सिद्ध हो जाता है।

10.2.1 व्याप्ति

हेतु और साध्य के बीच का संबंध जिससे अनुमान होता है, उसे व्याप्ति कहते है। अनुमान के लिए दो बाते आवश्यक है। प्रथम, पक्ष और हेतु का संबंध और दूसरा, हेतु और साध्य का व्याप्ति संबंध उदाहरण के लिए पर्वत में आग है इसे सिद्ध करने के लिए दो बाते आवश्यक है– प्रथम, पक्ष (पर्वत) में हेतु (धुएँ) का होना और दूसरा, हेतु (धुएँ) और साध्य (अग्नि) में व्याप्ति संबंध। हेतु और साध्य के इस व्यापक संबंध को ही व्याप्ति कहते है। इसके आधार पर ही पर्वत में आग है, को सिद्ध किया जा सकता है।

प्रकार – व्याप्ति से दो वस्तुओं के पारस्परिक संबंध का बोध होता है। जिनमें से एक व्याप्य होता है और दूसरा व्यापक ॥

(1) समव्याप्ति – जब समान विस्तार वाले दो पदों में व्याप्ति संबंध रहता है, तो उसे समव्याप्ति कहते है। इनकी व्यापकता बराबर होने के कारण एक से दूसरे का और दूसरे से पहले का अनुमान किया जा सकता है।

(2) असमव्याप्ति – कोई वस्तु दूसरी वस्तु में व्याप्त है अर्थात् वह वस्तु दूसरी वस्तु के साथ बराबर रहती है। धुएँ और अग्नि के उदाहरण में धुआँ व्याप्त है क्योंकि धुएँ के साथ आग बराबर पायी जाती है। यहाँ, सभी धूमवान पदार्थ अग्नियुक्त होते है किन्तु सभी अग्नियुक्त पदार्थ धूमवान नहीं होते।

अर्थात् दो पदों में जब इस प्रकार का विषम सम्बन्ध रहता है एक से (कम विस्तार वाले से) दूसरे का (अधिक विस्तार वाले का) अनुमान किया जा सकता है, किन्तु दूसरे से पहले का अनुमान नहीं हो सकता। इसे अयसम व्याप्ति या विषम व्याप्ति कहते है

व्याप्ति का लक्षण :– हेतु और साध्य के उस साहचर्य को व्याप्ति कहते है जो उपाधिहीन हो अर्थात् किसी विशेष अवस्था पर निर्भर नहीं हो।

10.2.2 व्याप्ति की विधियाँ

(1) **अन्वय** – जब एक वस्तु के रहने पर दूसरी भी रहती है। इसका एक भी व्यतिक्रम नहीं देखा जाता। उदाहरण के लिए जहाँ–जहाँ धुआँ देखा जाता है उसके साथ आग भी देखी जाती है।

(2) **व्यतिरेक** – एक के नहीं रहने पर दूसरे का नहीं रहना, व्यतिरेक कहलाता है। अर्थात् आग के नहीं रहने से धुआँ भी नहीं पाया जाता है।

(3) **व्यभिचाराग्रह** – व्यभिचाराग्रह अर्थात् किसी व्यभिचार का नहीं होना, व्याप्ति को निश्चायक बनाता है। आज तक हमने ऐसा कोई स्थान नहीं देखा जहाँ धुआँ तो हो परन्तु अग्नि न हो।

(4) **उपाधि–निरास** – उपाधियों का निराकरण किए बिना व्याप्ति का संबंध स्थापित नहीं किया जा सकता। ''उपाधि वह है जिसका साहचर्य किसी अनुमान के साध्य के साथ रहता है। किन्तु साधन (हेतु) के साथ सदैव नहीं रहता है।''

उदाहरण– यदि धुएँ से अग्नि का अनुमान करे तो यह अनुमान ऐसी व्याप्ति पर निर्भर होगा तो अनौपाधिक नहीं है, ऐसा अनुमान भ्रमात्मक होगा क्योंकि यहाँ धूम साध्य है और अग्नि साधन है और आग धुँआ तभी उत्पन्न करती है जब ईंधन भीगा हो।

(5) **तर्क** – अनुभव केवल वर्तमान तक सीमित रहता है। व्याप्ति की स्थापना की उक्त विधियाँ अनुभव पर आधारित है। जब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि अनुभव पर आधारित व्याप्ति भविष्य में ठीक कैसे मानी जाएगी?नैयायिक 'तर्क' के द्वारा इसका समाधान प्रस्तुत करते है। उदाहरण – 'यदि सभी धूमवान पदार्थ अग्नियुक्त है' – यह वाक्य यदि असत्य है तो उसका पूर्ण विरोधी वाक्य 'कुछ धूमवान पदार्थ अग्नियुक्त नहीं है' – अवश्य सत्य होगा। (तर्कशास्त्र का नियम है कि दो पूर्ण विरोधी वाक्य एक ही साथ असत्य नहीं हो सकते) यदि 'कुछ धूमवान पदार्थ अग्नियुक्त नहीं है' को

सत्य मान लेने से धुएँ का अस्तित्व अग्नि के बिना भी सम्भव हो जाता है अर्थात् कार्य की उत्पत्ति कारण के बिना भी हो सकती है और इस प्रकार कार्य कारण सिद्धान्त का खण्डन हो जाता है अतः सिद्ध होता है कि धुएँ और आग के बीच व्याप्ति सम्बन्ध है

(6) सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष – इससे व्याप्ति में पूर्ण निश्चयात्मकता आती है। यह अलौकिक प्रत्यक्ष का एक भेद है। व्यक्ति के प्रत्यक्ष में उसकी जाति का प्रत्यक्ष हो जाता है। उदाहरण के लिए मनुष्य के प्रत्यक्ष में उसकी जाति (मनुष्यत्व) का प्रत्यक्ष हो जाता है। मनुष्यत्व एवं मरणशीलता में साहचर्य संबंध का प्रत्यक्ष कर हम कहते है कि 'सभी मनुष्य मरणशील है। दूसरे का (अधिक विस्तार वाले का) अनुमान किया जा सकता है। किन्तु दूसरे से पहले का अनुमान नहीं हो सकता। इसे असम व्याप्ति या विषम व्याप्ति कहते हैं।

10.03 शब्द प्रमाण

शब्दों, एवं वाक्यों से जो वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त होता है उसे शब्द कहते हैं। शब्द को प्रमाण तभी समझा जाता है जब इसके द्वारा यथार्थ–ज्ञान मिलता है। विश्वासयोग्य व्यक्ति (आप्त पुरूष) के वचन के अर्थ का ज्ञान शब्द प्रमाण है।

शब्द – भेद
(ज्ञातव्य विषयों के आधार पर)

दृष्टार्थ	अदृष्टार्थ
जिन शब्दों से ऐसी वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त होता है, जिसका प्रत्यक्ष हो सके। उदाहरण – साधारण मनुष्य तथा महात्माओं के विश्वास योग्य वचन, धर्मग्रन्थों की वैसी उक्तियाँ जो दृष्ट पदार्थों के संबंध की हो।	जिन शब्दों से अदृष्ट वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त होता है। उदाहरण – साधारण मनुष्य तथा महात्माओं के वचन जो प्रत्यक्ष के बाहर वस्तुओं के संबंध में हो, पाप–पुण्य आदि के संबंध में धर्मगुरूओं के वचन। अर्थात् वैसी उक्तियाँ जो अदृष्टार्थ–पदार्थो के संबंध की

शब्द – भेद
(शब्द की उत्पत्ति के सम्बन्ध में)

वैदिक	लौकिक
ये ईश्वर के वचन माने जाते हैं। अतः ये निर्दोष और अभ्रान्त होते हैं।	ये सभी शब्द सत्य नहीं होते, मिथ्या भी हो सकते हैं। लौकिक शब्द केवल वे ही सत्य है जो विश्वासयोग्य व्यक्तियों के वचन होते है।

वाक्य

वाक्य ऐसे पदों का समूह है जो एक विशेष ढ़ंग से क्रमबद्ध रहते हैं। पद भी ऐसे अक्षरों का समूह है जो विशेष ढंग से क्रमबद्ध रहते हैं। पद का किसी विषय के साथ एक निश्चित संबंध रहता है। शब्द अर्थ का प्रतीक है। शब्दों में अर्थ–बोध कराने की जो क्षमता है उसे शब्दों की शक्ति कहते हैं। वाक्य बोध अथवा अर्थपूर्ण वाक्यों के बोध लिए चार बातें आवश्यक हैं आंकाक्षा, योग्यता, सन्निधि तथा तात्पर्य।

(1) आकांक्षा

जब तक एक पद का दूसरे पदों के साथ संबंध न स्थापित किया जाए तब तक वाक्य पूरा नहीं हो सकता है। जब कोई व्यक्ति कहता है 'लाओं', तो प्रश्न उत्पन्न होता है 'क्या'?इसे सार्थक वाक्य बनाने के लिए किसी पद की अपेक्षा रहती है, वह पद 'घड़ा' हो सकता है। 'घड़ा – लाओ' एक सार्थक वाक्य बन जाता है।

(2) योग्यता

वाक्य के पदों द्वारा जिन वस्तुओं का बोध होता है उनमें यदि कोई विरोध न हो तो इस विरोध के अभाव को योग्यता कहते है। उदाहरण के लिए 'आग से सींचो' वाक्य के पदों में योग्यता का अभाव है क्योंकि 'आग' और 'सींचना' में परस्पर विरोध है।

(3) सन्निधी

कोई वाक्य तभी अर्थ सूचक हो सकता है, जब उसके पदों में समय एवं स्थान की दृष्टि से निकटता हो। उदाहरण के लिए 'एक गाय लाओ' यदि ये एक एक कर तीन दिनों में बोले जाएं या तीन पृष्ठों पर अलग अलग लिखे जाएं तो समय और स्थान का बहुत अन्तर होने के कारण वाक्य नहीं बनता।

(4) तात्पर्य

विभिन्न स्थानों में एक ही पद के कई अर्थ हो सकते है। किसी विशेष स्थान पर क्या अर्थ होगा यह वक्ता या लेखक के अभिप्राय पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए – यदि किसी व्यक्ति को कहा जाए कि ''सैंधव लाओ'' – सैंधव का अर्थ नमक और सिंधु देश का घोड़ा दोनों है। यदि वक्ता के अभिप्राय की सहायता ले (अर्थात् यदि भोजन करते समय उक्त वाक्य कहने पर 'नमक' लाना है और युद्ध के मैदान में कहने पर 'घोडा' लाना है) तो उक्त वाक्य का सही अर्थ समझा जा सकता है।

बहुविकल्पी प्रश्न

(1) लौकिक प्रत्यक्ष का प्रकार नहीं है –
(अ) बाह्य (ब) मानस (स) प्रत्यभिज्ञा (द) सामान्य लक्षण

(2) अलौकिक प्रत्यक्ष का प्रकार नहीं है –
(अ) योगज (ब) प्रत्यभिज्ञा (स) सामान्य लक्षण (द) ज्ञान लक्षण

(3) अनुमान के अवयव है –
(अ) हेतू (ब) पक्ष (स) साध्य (द) उक्त तीनों

(4) अनुमान का भेद है –
(अ) सामान्य लक्षण (ब) सामान्यतोदृष्ट (स) व्यभिचाराग्रह (द) योगज

(5) अनुमान के दोष है –
(अ) बाधित (ब) असिद्ध (स) विरूद्ध (द) सभी

(6) स्वार्थानुमान के अवयवों की संख्या होती है –
(अ) चार (ब) पाँच (स) तीन (द) दो

(7) व्याप्ति की विधियाँ हैं –
(अ) उपाधि–निरास (ब) व्यभिचाराग्रह (स) व्यतिरेक (द) तीनों

(8) वाक्य बोध का कारण नहीं है–
(अ) योग्यता (ब) तात्पर्य (स) सन्निधि (द) अन्वय

(9) प्रत्यक्ष में शामिल है–
(अ) यथार्थता (ब) असंदिग्धता (स) अनुभव (द) तीनों

(10) (अतीत ज्ञान के कारण) वर्तमान में जब एक इन्द्रिय दूसरे के विषय का अनुभव करता है, यह कहलाता है–
(अ) प्रत्यभिज्ञा (ब) योगजप्रत्यक्ष
(स) सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष (द) ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष

(11) पंचावयव अनुमान का अंग नहीं है–
(अ) उपनय (ब) निगमन (स) उदाहरण (द) पक्ष
(12) स्वार्थानुमान का अंग है–
(अ) साध्य (ब) पक्ष (स) हेतु (द) तीनों
(13) शब्द प्रमाण है–
(अ) आप्त वचन (ब) ईश्वर वचन
(स) धर्मग्रन्थों की उक्तियाँ (द) तीनों
(14) वाक्य बोध का कारण है–
(अ) आकांक्षा (ब) तात्पर्य (स) सन्निधि (द) तीनों
(15) योग में आंशिक सिद्धि प्राप्त व्यक्ति कहलाता है–
(अ) ऋषि (ब) युवन्त (स) आप्त पुरूष (द) युंजान

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

(1) भारतीय तर्कशास्त्र के अनुसार कितने प्रमाण हैं?
(2) इन्द्रिय–वस्तु संयोग के आधार पर प्रत्यक्ष के प्रकार कितने हैं?
(3) लौकिक प्रत्यक्ष के प्रकार बताइये?(इन्द्रिय तथा वस्तु के संयोग के आधार पर)
(4) अलौकिक प्रत्यक्ष के भेद कितने होते हैं?
(5) लौकिक प्रत्यक्ष के भेद बताइये?(प्रत्यक्ष ज्ञान के विकसित और अविकसित रूप के आधार पर)
(6) योग में सिद्धि प्राप्त व्यक्ति, जिसकी शक्तियों का कभी नाश नहीं होता, कहलाता है?
(7) 'यही वह मनुष्य है (जिसे पहले देखा था)' कौनसा प्रत्यक्ष है?
(8) अनुमान का शाब्दिक अर्थ है?
(9) अनुमान के अवयव हैं?
(10) प्रयोजन भेद के आधार पर अनुमान के प्रकार है?
(11) व्याप्ति भेद के आधार पर अनुमान के प्रकार कितने हैं?
(12) अनुमान के दोष कितने हैं? (13) अनुमान के दोष किसे कहते हैं?
(14) वाक्य बोध के कितने कारण हैं? (15) शब्द प्रमाण के कितने प्रकार हैं?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

(1) प्रत्यक्ष और भ्रम के अन्तर को समझाइये? (2) प्रत्यक्ष और संशय के अन्तर को समझाइये?
(3) बाह्य प्रत्यक्ष क्या है? (4) योगज प्रत्यक्ष क्या है?
(5) निर्विकल्पक प्रत्यक्ष क्या है? (6) प्रत्यभिज्ञा को समझाइये।
(7) परार्थ अनुमान क्या है? (8) अन्वय व्यतिरे की अनुमान है?
(9) समव्याप्ति क्या है? (10) व्यभिचाराग्रह क्या है?
(11) उपाधि निरास क्या है? (12) अदृष्टार्थ शब्द क्या है?
(13) लौकिक शब्द क्या है? (14) आंकाक्षा किसे कहते हैं?
(15) तात्पर्य किसे कहते हैं?

निबन्धात्मक प्रश्न

(1) प्रत्यक्ष क्या है?लौकिक प्रत्यक्ष के प्रकारों को विस्तार से समझाइये।
(2) अनुमान क्या है?अनुमान के प्रकारों की सविस्तार व्याख्या कीजिये।
(3) व्याप्ति क्या है?निर्दोष व्याप्ति किसे कहते है?व्याप्ति की विभिन्न विधियों को समझाइये।
(4) शब्द प्रमाण के भेदों को स्पष्ट कीजिये। वाक्य–बोध के चार कारण कौन–कौन से हैं?समझाइये।

संदर्भ एवं सहायक ग्रन्थ

पाठ्यक्रम निर्माण के लिये निम्न संदर्भ एवं सहायक ग्रन्थों से आवश्यकतानुसार कुछ सामग्री एवं सहायता ली गयी है। अतः आवश्यकतानुसार ली गयी सामग्री का सर्वाधिकार संदर्भ एवं सहायक ग्रन्थों के लेखक/प्रकाशक का ही है।

1. संगमलाल पाण्डेय
   नीतिशास्त्र का सर्वेक्षण
   सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाउस, इलाहबाद।

2. वेद प्रकाश वर्मा
   नीतिशास्त्र के मूल सिद्धान्त
   ऐलाइड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।

3. डॉ. बांकेलाल शर्मा
   तर्कशास्त्र प्रवेश
   हरियाणा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, चण्डीगढ़।

4. श्री सतीशचन्द्र चटोपाध्याय एवं धीरेन्द्र मोहन दत्त
   भारतीय दर्शन
   पुस्तक भंडार, पटना।

5. प्रो. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा
   भारतीय दर्शन की रूपरेखा
   मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड़, जवाहर नगर, दिल्ली।

6. अशोक कुमार वर्मा
   सरल निगमन तर्कशास्त्र
   (पाश्चात्य और भारतीय)
   मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड़, जवाहर नगर, दिल्ली।

7. डॉ. हृदय नारायण मिश्र एवं डॉ. जमुना प्रसाद अवस्थी
   नीतिशास्त्र की भूमिका
   हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़।

8. इरविंग एम. कापी
   तर्कशास्त्र का परिचय
   (अनुवादक – संगमलाल पाण्डेय एवं गोरखनाथ मिश्र)
   एशिया बुक कम्पनी, युनिवर्सिटी रोड़, इलाहबाद।

9. प्रो. नित्यानन्द मिश्र
नीतिशास्त्र
(सिद्धान्त तथा प्रयोग)
मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड़, जवाहर नगर, दिल्ली।

10. अशोक कुमार वर्मा
सरल आगमन तर्कशास्त्र
(पाश्चात्य और भारतीय)
मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड़, जवाहर नगर, दिल्ली।

11. एस. एन. दासगुप्ता
भारतीय दर्शन का इतिहास
(भाग 1 से 5)
राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

12. अशोक कुमार वर्मा
नीतिशास्त्र की रूपरेखा
(पाश्चात्य और भारतीय)
मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड़, जवाहर नगर, दिल्ली।

13. Irving M. Copi and Carl Cohen
Introduction to LOGIC
(EIGHTH EDITION)
Macmillan Publishing Company, New York.

14. Dr. Jadunath Sinha
A Manual of ETHICS
The Central Book Agency, 14 Bankim Chatterjee Street, Calcutta.